डाक पंजीयन संख्या - आर.जे./डब्ल्यू. आर./27/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
मूल्य : पाँच रुपये

अजायब ✡ बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - चार || **अंक** - तीसरा || **मासिक** पत्रिका || **जुलाई** - 2006

3

आवश्यक सूचना

[मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए एक प्रार्थना]

4

धन्य अजायब

[सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी]

5

भक्ति का दान

[बाबाजी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें]
27 अक्टूबर 1995 16 पी.एस.आश्रम

6

दाता जी कित्थे गियों

[एक शब्द]

7

आज्ञा का पालन

[एक यादगार दास्तान]

13

दर्शनों की महानता

[परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब, 14 मार्च 1995, सांपला]

19

परमात्मा से मिलाप

[कबीर साहब की बानी]

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज 30 सितम्बर, 1994 16 पी.एस.आश्रम

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक - प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

फोन - 0154-246 4601, **मोबाइल** : 94144-80303

उप सम्पादक - नंदिनी

विशेष सलाहकार - गुरमेल सिंह नौरिया

सहयोग - सुखपाल कौर नौरिया

पृष्ठ साज-सज्जा - राजेश कुक्कड़

सन्त बानी आश्रम

गांव व डाकखाना : 16 पी.एस.

तहसील : रायसिंहनगर - 335 039

जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

फोन : 01507-240 014

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website** : www.ajaibbani.org

आवश्यक सूचना

जिन प्रेमियों को यह मासिक पत्रिका डाक द्वारा भेजी जा रही है और वे भविष्य में इससे लाभ उठाना चाहते हैं। उनसे प्रार्थना है कि वे नीचे दिया गया फार्म वापिसी डाक से भेजने का कष्ट करें।

जिन प्रेमियों के फार्म वापिस नहीं पहुँचेंगे उनके नाम डाकसूची से निकाल दिए जाएंगे और समझा जाएगा कि वे इस पत्रिका के चाहवान नहीं हैं।

S.No.

Name : .....

Address : .....

.....

.....

.....

Pin Code ☐☐☐☐☐☐

– कृपया इस फार्म को लिफाफे में डालकर,
उचित मूल्य की टिकट लगाकर नीचे लिखे पते पर भेजें

अजायब बानी
1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर – 335 001 (राजस्थान)
फोन नं. 0154–246 4601 मोबाइल : 94144–80303

धन्य अजायब

८ सतसंगों के कार्यक्रम ८

अहमदाबाद

13 से 15 अगस्त – 2006

श्री लोहाना विद्यार्थी भवन,

(व्यायाम विद्यालय के पीछे)

कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

07	से	11	सितम्बर –	2006
27	से	29	अक्टूबर –	2006
24	से	26	नवम्बर –	2006
29	से	31	दिसम्बर –	2006

बाबाजी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

भक्ति का दान

27 अक्टूबर 1995 16 पी.एस.आश्रम

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने अपार दया करके हमें अपनी **भक्ति का दान** दिया है। सतगुरु हमें अपनी आत्मा का, **भक्ति का दान** देते हैं। कोई भी दान इस दान की बराबरी नहीं कर सकता। यह उन्हीं की दया है जो हम उनकी याद में बैठे हैं।

महाराज जी कहा करते थे, ''इस अमृत-वेला के समय आत्मा ने शरीर में नया नया प्रवेश किया होता है हम पिछले ख्याल भूले होते हैं। इस समय अभ्यास करने से आत्मा को एकाग्र होने में बहुत मदद मिलती है।''

हम चाहे यहाँ अभ्यास करें या अपने घर में करें इसे बोझ न समझें, प्रेम-प्यार से करें। अभ्यास को बोझ समझने वालों के लिए गुरु नानक साहब ने कहा है:

बध्धा चट्टी जो भरे, न गुण न उपकार।

अगर हम बोझ समझकर अभ्यास करते हैं कि यहाँ आए हैं अब बैठना ही पड़ेगा ! हमें उसका वैसा ही फल मिलता है। हमने श्रद्धा और प्रेम-प्यार से भजन सिमरन करना है। आप आँखें बंद करके अपना भजन-सिमरन शुरू करें।

h c h

दाता जी कित्थे गियों

दाता जी कित्थे गियों, प्रीतमां वे कित्थे गियों, (2)

हत्थी अपनी बाग सजाके,
आपे तूं ऐह बुटे लाके,
नहीं सी छड़ जाणा सानू, मालियां वे,
कित्थे .....

पता जे हुंदा नाल ही जांदे,
कानू अैडे दुःखड़े उठांदे,
जे चिर लोणा सी, रखवालिया वे,
कित्थे .....

हुणं तां डोले जग दा बेड़ा,
बन्ने लावे होर हुण केड़ा,
तेरे बाजो कौण बचावे, खुश हालिया वे,
कित्थे .....

सुण फरियाद अजायब दी आवीं,
आके दुःखियां दा दर्द मिटावीं,
सोहणा आके दर्श दिखा जा, संगत दिया वालियां वे,
कित्थे .....

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखार बिन्दु से

आज्ञा का पालन

एक यादगार दास्तान

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर अपनी फौज के साथ आगे बढ़ रहा था, उसकी फौज को रोका नहीं जा सकता था। उस समय भारत के लोग फौज में भर्ती होने के लिए तैयार नहीं थे। लोग जानते थे कि उनकी मौत निश्चित है, वे घर वापिस नहीं आएंगे। लोगों को जबरदस्ती फौज में भर्ती किया जा रहा था। लोग जंग में जाने से इतना डरे हुए थे कि उन्हें जेल में बीस साल रहना आसान लग रहा था; वे सोचते थे कि फौज में भर्ती होना आत्महत्या के बराबर है।

मुझे एक महात्मा ने बताया था कि अगर कोई फौज में मर जाता है तो वह स्वर्ग में जाता है। मुझे स्वर्ग देखने की इच्छा थी। जब फौज में भर्ती करने वाले हमारे गाँव में आए उस समय मैं अपने गाँव में से अकेला ही इन्सान था जो फौज में भर्ती हुआ, उस समय मेरी आयु अठारह साल भी नहीं थी।

मुझे कोई आदेश नहीं दिया गया था, अभी मेरी बारी भी नहीं थी। मैंने खुश होकर जंग में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया। मेरे अफसरों ने मेरी हिम्मत देखकर कहा, ''यह अभी छोटा है फिर भी जंग में जाकर अपना बलिदान देने के लिए तैयार है।'' उस समय मेरे अंदर बहुत उत्साह था, मुझे मौत का डर नहीं था। मैं किसी भी मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार था।

भर्ती के एक महीना बाद जब हमें जंग में भेजा जाना था; उस समय हम सबका डाक्टरी परीक्षण किया गया। डाक्टर ने परीक्षण करने के बाद बताया कि किन जवानों को दूध की जरूरत है। हमारे कमांडर ने बहुत दुःखी होकर कहा, ''ये सभी बलि के बकरे हैं; मैं चाहता हूँ कि सबके लिए दूध लगवा दिया जाए।''

मैं बहुत बहादुर था, मुझे मौत की कोई चिन्ता नहीं थी। मुझे मालूम था कि मौत उसी तरह आती है जिस तरह किस्मत में लिखी होती है। मुझे फौज में भर्ती होने का कोई पछतावा नहीं हुआ।

मैं जब दोबारा बाबा बिशनदास जी के पास गया तो मैंने उन्हें फौज में भर्ती होने का कारण बताया। आपने कहा, ''स्वर्गों में भी मौत, पैदाईश, प्यार, दुश्मनी सब कुछ है। जिस तरह धरती पर भौतिक शरीर और भौतिक रस-भोग हैं, उसी तरह स्वर्ग में भी सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म रस-भोग हैं। जहाँ रस-भोग और शरीर हैं वहाँ मन शरीर से जुड़ा हुआ है। जहाँ मन है वहाँ शान्ति और संतुष्टि नहीं।''

आपने मुझे स्वर्गों के राजा इन्द्र देवता की कहानी सुनाई। जब इन्द्र देवता के काम की संतुष्टि स्वर्गों की किसी दैवीय नारी से नहीं हुई तब उसकी नजर एक ऋषि की पत्नी पर पड़ी। इन्द्र ने काम इच्छा को पूरा करने के लिए संसार में मनुष्य का रूप धारण करके ऋषि की पत्नी का सत भंग करके अपनी शान्ति खो दी।

ऋषि की पत्नी भगवान की भक्ति करती थी। ऋषि ने राजा इन्द्र को श्राप दिया जिसका परिणाम राजा इन्द्र को अपना देश छोड़कर जाना पड़ा। जब स्वर्गों के राजा की यह हालत है तो स्वर्ग में रहने वाले बाकी लोगों की क्या हालत होगी?

बाबा बिशनदास जी ने मुझे बताया कि लोग स्वर्ग में जाने के लिए जप-तप और अच्छे कर्म करते हैं। वहाँ सूक्ष्म रूप में रहने वाले भी शारीरिक भोग-विलास करते हैं। जहाँ भोग विलास हैं वहाँ शान्ति और संतुष्टि नहीं; फिर स्वर्गों में जाने का क्या फायदा?

मैंने फौज में **आज्ञा पालन** और अनुशासन में रहना सीखा। यह सब इन्सान की अपनी समझ पर निर्भर है। फौज में यह कानून है कि आपको जो काम दिया जाए आप पहले वह काम करें अगर आपके दिमाग में कोई दुविधा है तो बाद में पूछें।

अगर आप बहाने बनाएंगे तो आपके अफसर आपसे नाराज हो जाएंगे। फौज में जो लोग **आज्ञा का पालन** नहीं करते थे उन्हें सजा मिलती या उन्हें घर वापिस भेज दिया जाता था। मैंने अपने अफसरों की **आज्ञा का पालन** करके ही उनकी खुशी हासिल की।

सतसंग में भी यही बताया जाता है कि आप **आज्ञा का पालन** करें और अनुशासन में रहें। 'नामदान' के समय बहुत सारी बातें बताई जाती हैं कि आदेशों की सीमारेखा के अंदर रहना ही अनुशासन है। सन्तमत में हमें एक सिपाही की तरह बहादुर बनना पड़ता है। जिस तरह हम बहुत कष्ट में रहते हुए भी सांसारिक और सरकारी काम करते हैं; उसी तरह हमें हमेशा सतगुरु से डरना चाहिए और गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

आज्ञा पालन और अनुशासन की आदत ने जिंदगी में मेरी बहुत मदद की। इसी आदत की वजह से जब मैं अपने गुरु से मिला उन्होंने मुझे जो करने के कहा, मैं वह कर सका।

ट्रेनिंग के दौरान हमें बंदूक चलाना सिखाते हुए समझाया गया कि हमने निशाने पर गोली चलानी है। बंदूक चलाते हुए हमने सबसे पहले शरीर, बंदूक और निशाना एक लाईन में रखने हैं। बिना हिले-डुले साँस रोकर पूरे ध्यान से बंदूक के अगले और पिछले दोनों भागों के बीच से देखना है। दोनों आखों की नजर को एक ही लाइन में सीधा रखकर धीरे से घोड़ा दबाना है।

जो लोग सिखाए गए तरीके के मुताबिक गोली चलाते थे, वे कामयाब होते थे। जो लोग अपना ध्यान, शरीर, बंदूक और निशाना एक लाइन में नहीं रखते थे या हिल जाते वे कामयाब नहीं होते थे।

भजन-अभ्यास में भी यही बात लागू होती है। जब हम भजन में बैठते हैं हमारा निशाना आँखों के बीच का स्थान है। हमने भजन में अपने शरीर को उसी तरह स्थिर रखना होता है जैसे फौज में बंदूक

चलाते हुए अपने शरीर, दिमाग और मन को स्थिर रखते हैं। अगर हम अपने ध्यान को ठीक तरीके से अपनी आँखों के बीच टिका लें ! कुछ ही बैठकों में तरक्की होने लगती है।

हमें एक इंच की जगह में पाँच गोलियाँ चलानी होती थी। बार-बार निशाना बदलने वाले कामयाब नहीं होते। मैंने हर समय एक ही निशाना रखा। इसी आदत ने सन्तमत में मेरी बहुत मदद की। गुरु हमसे कहता है, ''प्यारेयो ! अगर आप कामयाब होना चाहते हैं तो अपने ध्यान को एक ही जगह एकाग्र करें।''

फौज में अलग-अलग किस्म के लोग होते हैं। उनमें से कुछ एक तो शराब पीते, वैश्याओं के पास जाते और गन्दी भाषा का इस्तेमाल करते। मुझे याद है कि शुरू-शुरू में वे लोग शाम को शराब पीकर नाचते, गन्दे शब्दों का इस्तेमाल करते और मेरे पलंग के पास भी आ जाते। वे मुझे भी अपने साथ शामिल होने के लिए कहते लेकिन मैं उनसे कभी प्रभाावित नहीं हुआ। मैं सिर पर चादर ओढ़कर सो जाता। वे कभी-कभी मेरे ऊपर से चादर खींच लेते लेकिन मैं उन्हें अपने ऊपर से चादर नहीं हटाने देता था।

हम सब एक बड़े बैरक में रहते थे। जब उन्हें अहसास हुआ कि मैं उन जैसा नहीं हूँ, भक्ति कर रहा हूँ। वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे तंग करना छोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने बैरक में शराब पीने की हिम्मत नहीं की। वे बैरक से बाहर जाकर शराब पीने लगे।

अगर हम बैठकर सिमरन कर रहे हैं, कुछ लोग हमारे नज़दीक बैठकर बातें कर रहे हैं और हम उनकी बातों पर ध्यान देते हैं; अपने दिल में उनके लिए गलत सोचते हैं तो हम भक्ति नहीं कर रहे होते। अगर हम सिमरन करते हुए उनकी बातों पर तवज्जो नहीं देते तो कुछ देर बाद उन्हें अहसास हो जाएगा कि वे गलत कर रहे हैं, क्योंकि परमात्मा उनके अंदर भी विराजमान है।

अगर हमारा सिमरन पक्का है, हम अपने आपमें सच्चे हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता चाहे कितने ही लोग हमारे नज़दीक बैठकर बातें कर रहे हों; परमात्मा उन्हें चुप करवाएगा और वे अपने आप ही बाहर चले जाएंगे। परमात्मा कोई न कोई तरीका निकालकर हमारे लिए परिस्थिति आसान बनाएगा ताकि हम ज्यादा से ज्यादा सिमरन कर सकें।

अगर मैं उन लोगों से यह कहता कि मैं अभ्यास कर रहा हूँ, आप लोग चुप रहें तो वे और शोर मचाकर मुझे तंग करते। मैंने उनकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया, अपना काम करता रहा।

मेरी लोगों से मेलजोल की आदत नहीं थी। मैंने कभी ताश और शतरंज नहीं खेली। मैं भीड़-भाड़ वाली जगह बाजारों और शहरों में भी नहीं जाता था। अगर मुझे कपड़ा, साबुन या किसी और सामान की जरूरत होती तो मैं अपने दोस्तों से ये सब चीज़े मँगवा लेता। लोग मेरा मजाक उड़ाते और मुझसे कहते, ''अगर तुम्हे इस संसार के बारे में कुछ मालूम नहीं तो तुम इस संसार में क्यों आए हो?''

मैं अपनी जिंदगी में कभी फिल्म देखने नहीं गया। फौज में हमें हर रविवार को मुफ्त में फिल्म दिखाई जाती थी। सब लोग फिल्मों की तारीफ करते और मुझसे कहते, ''यह बहुत अच्छा मनोरंजन है। पैसे भी नहीं देने पड़ते फिर तुम फिल्म क्यों नहीं देखते?'' मेरे अफसर भी मुझसे पूछते कि तुम फिल्म देखने क्यों नहीं जाते? वे लोग जब मुझे फिल्म देखने के लिए प्रेरित करते तो मैं उन्हें अंदर की फिल्म देखने के लिए प्रेरित करता। मैं उन्हें बताया करता, ''अगर जहर मुफ्त में भी मिले तो वह बुरा ही असर करती है।''

मैं यह नहीं कहता कि संसार बुरा है लेकिन मैं इसे अपनाना नहीं चाहता था। आधुनिक वस्तुएं इन्सान को बाहरमुखी बनाती हैं। मैं अंतरमुखी बनने की कोशिश कर रहा था। फिल्में देखने से संसार की लहरें दिमाग में आती हैं और मन संसार में फैल जाता है अगर हम फिल्में देखें ! तो हमें अभ्यास में वही सब दिखाई देगा।

अगर आप सच्ची सुंदरता और शान्ति चाहते हैं तो एक जगह बैठकर अपने अंदर देखने की कोशिश करें, अंदर बहुत सुंदर चीज़ें हैं। बाहर के मनोरंजन से हम दो-तीन घंटों में थक जाते हैं लेकिन अंदर का मनोरंजन ऐसा है जिसे देखकर कभी थकावट नहीं होती। मैं अंदर जाकर उस जीवंत फिल्म को देखने की कोशिश कर रहा था जो मेरे अंदर चल रही थी, इसलिए मैं बाहरी फिल्में नहीं देखना चाहता था।

लोग फिल्में देखने जाते हैं जबकि स्क्रीन पर कुछ भी सच नहीं होता। बुरी फिल्में हमारे विचारों को फैला देती हैं। हम अंदरूनी चीज़ों की तरफ ध्यान नहीं देते, झूठी बातों पर अपना कीमती समय बर्बाद कर देते हैं। मैं अपने कमांडिंग अफसर से प्रार्थना करता कि फिल्म देखने की बजाय मुझे कोई काम दे दिया जाए। मेरे अफसर मुझसे कहते, ''अगर तुम फिल्म नहीं देखना चाहते तो जाकर आराम करो।'' मैं बैठकर 'हे राम' 'हे गोविंद' का जाप करता।

मुझे 'नामदान' नहीं मिला था तब भी मेरा बाहरी संसार में ज्यादा फैलाव नहीं था। मैं जब भी अभ्यास में अपनी आँखें बंद करता मुझे अंदर बहुत सुंदर चीज़ें दिखती। अगर कोई थोड़ा सा भी अंदर जाए और अंदर की झलक देख ले ! वह बाहरी फिल्में देखने ही नहीं जाएगा। अंदर की चीज़ें बहुत खूबसूरत हैं। मुझे अंदर बहुत सुंदर अनुभव हो रहे थे। मैं नहीं जानता था कि मुझे किस तरफ जाना है?

जब कोई फौज में भर्ती होता है तो वहाँ जो लोग पहले से होते हैं वे अपने जैसे विचार वालों की तादाद बढ़ाना चाहते हैं। माँस खाने वाले माँस की तारीफ करते हैं। शराब पीने वाले शराब की तारीफ करते हैं, लेकिन मजबूत इरादे वाले के साथ कोई मांस, शराब की जबरदस्ती नहीं करता। मेरा जाति तजुर्बा है:

जहाँ चाह वहाँ राह।

h c h

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

दर्शनों की महानता

14 मार्च 1995, साँपला

एक प्रेमी :- हम आपसे बहुत कुछ प्राप्त करने के बाद आपस में बातें ही करते हैं। हम यह क्या कर रहे होते है? क्या आप हमें इस बारे में कुछ बताएंगे?

बाबा जी :- मैं सावन-कृपाल का धन्यवाद करता हूँ। महाराज सावन सिंह जी दर्शनों पर बहुत जोर दिया करते थे। आप अक्सर कहा करते थे कि सेवक को **दर्शनों की महानता** का ज्ञान नहीं। दर्शनों से हमारे बहुत पाप कटते हैं, हमें अंदर जाने में बहुत मदद मिलती है।

गुरु अंगददेव जी ने शब्द-रूप गुरु नानकदेव जी को अपने अंदर प्रगट कर लिया। गुरु नानकदेव जी ने आपको संगत की संभाल के लिए मुकर्र कर दिया और आपसे कहा, ''तू जिसे 'नाम' देगा मैं उसकी संभाल करूँगा।''

गुरु अंगददेव जी उदास होकर रोया करते थे कि कण-कण में व्यापक मन मोहिनी सूरत अब आँखों से दूर हो गई है। आप एक कमरे में बंद होकर अभ्यास किया करते थे। गुरु नानकदेव जी की एक नामलेवा आपसे थोड़ी दूरी पर रहती थी। आप उसके पास जाते वह आपके साथ गुरु नानकदेव जी की बातें करती। जिसने गुरु को देखा होता है वही गुरु की महानता के बारे में बता सकता है। कमाई वाले गुरु को अंदर प्रगट कर लेते हैं, उनके लिए अंदर-बाहर कोई फर्क नहीं होता।

महाराज कृपाल बताया करते थे कि जब महाराज सावन अपने गुरुदेव जयमल सिंह जी के गाँव - 'घुमाणां' गए। आपने उस गाँव की सीमा पर लेटकर दंडवत चरण वंदना की। जब आप वहाँ सतसंग करने लगे तो रो पड़े, चुप नहीं हुए। यह देखकर महाराज कृपाल ने कहा, ''अगर आपकी यह हालत है तो हम जीवों की क्या हालत होगी?''

महाराज सावन सिंह जी ने भरे दिल से कहा, ''अगर आज मेरे गुरु बाबा जयमल सिंह जी पाँच तत्वों के शरीर में आकर दर्शन दे दें! मैं अपना सबकुछ उनके चरणों में न्यौछावर करने के लिए तैयार हूँ।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि हमें सतसंग में बैठते समय अपना ख्याल सब तरफ से हटाकर गुरु के माथे पर एकाग्र करना चाहिए। हम जितनी देर गुरु के सामने बैठे हैं हमें किसी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए। यहाँ तक कि पाठी की तरफ भी तवज्जो नहीं देनी चाहिए।

आप कहा करते थे कि बेहतर तो यह है कि हम सतसंग से उठकर थोड़ी देर अभ्यास में बैठें, उसी ध्यान में मग्न रहें। हम सतसंग

से उठकर जैसे-जैसे आपस में बातें करते हैं वैसे-वैसे हमारा दिल दर्शनों से खाली होना शुरू हो जाता है अगर हम सतसंग से पहले और बाद में थोड़ा सा सिमरन कर लें तो वह बहुत कारगर होता है।

महाराज कृपाल बताया करते थे कि एक बार रात का समय था। मैं और डाक्टर जानसन महाराज सावन की टाँगें दबा रहे थे। मैंने बातों-बातों में सावन सिंह जी से पूछा, ''महाराज जी ! अंदर किस तरह दिखाई देता है?'' महाराज सावन ने कहा, ''देख भाई कृपाल सिंह ! जो कुछ चिह्न-चक्र यहाँ देख रहे हो यही अंदर हैं। परमात्मा का रंग, रूप, रेख, भेख कुछ भी नहीं होता। हम उसका किस तरह ध्यान कर सकते हैं, उससे कैसे प्यार कर सकते हैं और वह हमें किस तरह समझा सकता है? परमात्मा इन्सान का चोला धारण करके आता है और हमें बताता है कि मैं इस रूप में तुम्हारे अंदर बैठा हूँ।''

जब हम अंदर ध्यान टिकाना शुरू कर देते हैं, हमारा प्यार बढ़ना शुरू हो जाता है। हमने अंदर जाकर उसी स्वरूप से मिलना है। *काल* सन्तों का रूप धारण करके भी धोखा देता है। जिन प्रेमियों के अंदर स्वरूप टिका होता है, उनका ख्याल जुड़ा होता है। वे जैसे ही 'पाँच-शब्द' का सिमरन करते हैं *काल* गायब हो जाता है।

आप लोग अनुराग सागर* पढ़ते हैं। अनुराग सागर में आता है कि *काल* ने कबीर साहब का रूप धारण करके रानी इन्द्रमती को धोखा दिया। जब इन्द्रमति ने उस स्वरूप को परखा तो *काल* गायब हो गया और वह *काल* के पंजे से आजाद हो गई।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक बार जब घोड़े से गिरकर मेरी टाँग टूट गई तब डाक्टरों ने मुझसे कहा कि आप मीट का सूप और शराब पिएं। उसी समय *काल* भी आ गया और उसने कहा कि ऐसे समय में दवाई के तौर पर मीट शराब लेने में कोई हर्ज नहीं। उस समय मैंने अपने गुरुदेव जयमल सिंह जी के दिए हुए 'पाँच-शब्द' का सिमरन किया, *काल* गायब हो गया।

मुम्बई में पिछली जनवरी के प्रोग्राम में कई प्रेमियों ने अभ्यास में काफी ऊँचे तजुर्बे बताए। जो प्रेमी सतसंग में एकाग्र होते हैं उन्हें ऊँचे मंडलों के अच्छे तजुर्बे होते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

जो सुख दर्शन देखके, से मुख से कहा न जाए।

सच्चखंड पहुँचे लोग **दर्शनों की महानता** मुँह से बयान नहीं कर सकते। गुरु अर्जुनदेव जी दर्शनों में मस्त होकर कहते हैं:

सज्जन रूप अनूप, अट्ठे पहर निहालसा।
फिरदा कित्थे हाल, जे डिट्ठा तां मन धराप्या॥

प्यारेयो ! जब मेरे गुरुदेव खुश होते तो मैं भी उनके साथ बहुत चोंचले करता, मेरे मुँह से यही निकलता :

सोहणयां तैनूं कोल बिठाके, हर वेले तकदी रवां।

प्यारेयो ! प्रेमी को स्थूल शरीर भी खींचता है। प्रेमी आँखों में आँखें डालकर मस्त हो जाता है। जब हम स्थूल से सूक्ष्म प्रगट कर लेते हैं तो उसे छोड़ नहीं सकते। जब सूक्ष्म से कारण प्रगट कर लेते हैं तो उसकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। जब हम 'शब्द रूप' गुरु को प्रगट कर लेते हैं, तो बस ! फिर यही कहते हैं कि दुनिया में तू सुंदर है, अनूप है; परियों का सरदार है।

जब सेवक 'शब्द रूप' गुरु को प्रगट कर लेता है तो उसका मान और अहंकार समाप्त हो जाता है। सेवक जान जाता है कि मुझसे पहले बहुत सी गुरमुख रूहें गुरु के इर्द-गिर्द बैठी हैं; मैं किस बाग की मूली हूँ। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

इक दू इक चढ़ंदीआं, कौण जाणै मेरा नाओं जीओ॥
जिन्हीं सखीं सौह राविआ, से अंबी छावड़ी ऐह जीओ॥

प्यारेयो ! संसार में ऐसा कोई कैमरा नहीं जो अंदर वाले स्वरूप की फोटो उतार ले। उस स्वरूप को देखकर आत्मा कह उठती है:

तेरे जेहा मैंनू ईक वी नी मिलना, मेरी जहियां तैनू लखी प्यारेया।

प्यारेयो ! सेवक को **दर्शनों की महानता** को समझना चाहिए। उसी स्वरूप में गुरु ने 'नाम' दिया होता है, अंत समय में हम उसी स्वरूप का ध्यान करते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी का एक नामलेवा सेवक जिसका नाम भी जयमल सिंह ही था, वह इस संसार से काफी आयु भोगकर गया। वह अच्छी कमाई वाला था और अक्सर मेरे पास ठहरा करता था। वह बताया करता था कि उस समय 'नामदान' लेने वाले प्रेमी थोड़े ही होते थे। 'नामदान' के समय बीच में ही किसी प्रेमी ने बाबा जयमल सिंह जी से पूछा, ''क्या यह सच है कि अंत समय में आप मुझे लेने आएंगे?'' बाबा जयमल सिंह जी ने हँसकर कहा, ''देख भई ! तू मेरे कपड़े पहचान ले। मैं तुझे इन्हीं कपड़ों में लेने आऊँगा।''

आप सोचकर देखें ! कपड़े की इतनी मुनियाद नहीं होती। यह गुरु की दया ही होती है कि गुरु जिस स्वरूप में शिष्य को 'नाम' देता है; अंत समय में वैसा ही स्वरूप दिखाकर शिष्य को ले जाता है।

केनेडा-केलगिरी में मुझसे एक अमेरिकन महिला मिलने आई। उस महिला और उसके पति ने 'नाम' लेने की कोशिश की लेकिन तैयार नहीं हो पाए। उनकी दोनों लड़कियाँ नामलेवा हैं। आमतौर पर उनके घर में रोज ही सतगुरु की चर्चा हुआ करती थी। उस महिला ने केलगिरी में छह-सात दिन सतसंग सुने। अंत में उसने यह कहा, ''मैं आपका धन्यवाद करने आई हूँ कि अस्पताल में मेरे पति की संभाल हुई। मुझे कोई शक नहीं मैंने दोनों गुरुओं की मौजूदगी देखी है। स्वरूप करके ही मुझे पहचान आई कि मेरे पति की संभाल हुई है।''

प्यारेयो! आप यहाँ पर दर्शनों की खातिर ही आए हैं। किताबें तो आप अपने देश में भी पढ़ सकते हैं। मैं कमजोर होते हुए भी ज्यादा से ज्यादा समय आपके आगे बैठने की कोशिश करता हूँ कि मेरे प्यारे बच्चे सात समुद्र पार से बहुत लम्बा सफर तय करके आए हैं। ये यहाँ से कुछ न कुछ प्राप्त करके जाएं। h c h

होई कौन खनामी साथों, लंघ जांदो चुप करके।
प्यार तेरे संग कीता ए ताँ, की रहना फिर डरके॥

तेरी ही हां तेरी साँ, जद तो चाहिया तैनूं,
दर तेरे ते आये हाँ कुझ, आस उम्मीदां लैके।

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी 30 सितम्बर, 1994–16 पी.एस.आश्रम

परमात्मा से मिलाप

कबीर साहब की बानी

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी आत्मा पर रहम किया। सन्त गरीब नवाज होते हैं। हम अपने बर्तन के मुताबिक ही उनसे दया प्राप्त करते हैं। महाराज सावन ने 45 साल तक दोनों हाथों से दया की दात बाँटी और होका देकर कहा, ''आप मुझे बेगाना न समझें, मैं आपका अपना हूँ।''

इतनी बड़ी दुनिया की इतनी बड़ी आबादी में से गिनती के जीवों ने ही सावन सिंह जी महाराज से फायदा उठाया। इसी तरह परमात्मा कृपाल ने भी खुले दिल से 'नाम' की दौलत बाँटी। आप सदा ही कहते रहे, ''मैं अपने पिता का फिजूल खर्च करने वाला बेटा हूँ, सवाल तो लेने वाले का है?''

प्यारेयो ! हमने अपने बर्तन के मुताबिक ही उनसे प्राप्त किया। आप सदा ही कहा करते थे, ''जब भी गुरु के पास जाएं मिट्टी की तरह बनकर जाएं।'' मिट्टी का अपना कोई स्वरूप नहीं होता। कुम्हार मिट्टी को डंडों से कूटता है, छानता है, पानी डालकर गूँथता है। चक्क पर चढ़ाकर उसके अंदर अपना हाथ रखता है; डोर से काटकर घड़ा बनाकर आखिर उसे आग में रख देता है। घड़ा देखने में सुंदर होता है। उसका पानी ठंडा होता है, पानी पीने वाले उस घड़े की कद्र करते हैं।

परमात्मा सन्तों को दया देकर भेजता है। सन्त **परमात्मा से मिलाप** करवाने के लिए आते हैं अगर हम खाली घड़ा लेकर सन्तों के पास जाते हैं, वे उसे भरने के लिए तैयार हैं अगर हमारा घड़ा पहले से ही भरा हुआ है तो उसमें वस्तु कैसे डाली जाएगी? हम सन्तों के पास अपनी ख्वाहिशें लेकर जाते हैं। आप सोचकर देखें ! क्या हम सन्तों के

पास मिट्टी की तरह जाते हैं? अगर हमें मामूली सा भी दर्द हो जाए तो हम भजन छोड़कर बैठ जाते हैं, गुरु परमात्मा में हजारों नुख्स निकालते हैं; कहते हैं, ''मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?''

महाराज सावन सिंह जी और सभी वेद-शास्त्र इस बात की गवाही देते हैं कि हमारा जीवन शुरू होने से पहले, माता के पेट में आने के समय ही सुख-दुःख, बीमारी-तंदुरुस्ती, गरीबी-अमीरी मुकर्र हो जाती है। हमें ये सब भोगना ही पड़ता है चाहे इसे हँसकर भोगें या रोकर भोगें ! जिंदगी में फायदा, नुकसान, बीमारी, तंदुरुस्ती जैसी घटनाएं वक्त आने पर घट जाती हैं।

अगर हम अंदर जाते हैं तो ऐसी घटनाओं का पता लगाना कोई खास मुश्किल नहीं होता लेकिन हम अंदर नहीं जाते बाहर बैठे हैं। हमें यह ज्ञान नहीं कि यह घटना क्यों घटी, यह मेरे किस कर्म का ईनाम है कि मैं सुख भोग रहा हूँ? अगर दुःख भोग रहा हूँ तो किन पापों का बदला चुका रहा हूँ?

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे संसार में आकर यही होका देते हैं कि आपको इन्सान का जामा मिला है। यह जामा बहुत अमूल्य है। परमात्मा ने आपको यह जामा विषय-विकार भोगने के लिए नहीं दिया। भोग तो हर योनि भोगती है। जानवर, पक्षी, रेंगने वाले कीड़े भी भोग भोगते हैं; सुख-दुःख, गर्मी-सर्दी महसूस करते हैं।

अगर हम इन्सान बनकर भी जानवरों वाले कर्म करते हैं तो हममें और जानवरों में क्या फर्क हुआ? हममें और जानवरों में यही फर्क हैं कि ये बेचारे भक्ति करके उन्नति नहीं कर सकते, **परमात्मा से मिलाप** नहीं कर सकते। किसी वक्त परमात्मा ने इन्हें भी मौका दिया था लेकिन इन्होंने इस मौके को दुनिया के भोगों में बर्बाद कर दिया।

अगर हम इन्सानी जामें का गलत इस्तेमाल करते हैं तो हमें इसकी बहुत भारी सजा चुकानी पड़ती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लख चौरासी जून सवाई, मानस को प्रभ दी बड़याई।
इस पौड़ी ते जो नर चूके, सो आए जाए दुःख पायेन्दा॥

आप कहते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इन्सान को **परमात्मा से मिलाप** करने का मौका मिलता है, यह सीढ़ी का आखिरी स्टैप है। अगर हम सम्भलकर कदम उठाते हैं तो मकान की छत-*सच्चखंड* में पहुँच जाते हैं अगर हमारा पैर फिसल जाता है तो हम जमीन पर गिर जाते हैं। चौरासी में चले जाते हैं, फिर पता नहीं परमात्मा यह मौका दे या न दे ! कबीर साहब कहते हैंः

मानस जन्म दुर्लभ है, होत न बारम्बार।
ज्यों बन फल पके भुएं गिरे, बोहर न लागे डार॥

एक बार फल पककर डाली से नीचे गिर जाता है तो वह वापिस डाली पर नहीं लगता। इसी तरह एक बार इन्सानी जामा हाथ से निकल जाए फिर **परमात्मा से मिलाप** करने का मौका मिलना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैंः

जो कुछ करना सो अब ही करना, अग्गे दा न भरोसा धरना।

हमने इसी जीवन में परमात्मा की भक्ति करनी है। जो लोग यह सोचते हैं कि फिर भक्ति कर लेगें ! उनके लिए सन्त कहते हैं कि अगर आप आज का काम कल पर छोड़ेंगे तो क्या पता कि कल कैसा आएगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मता करे पश्चिम की ताईं, पूर्व ही ले जात।

हम तो प्लानिंगें ही बनाते हैं, नहीं जानते कि परमात्मा ने हमारे लिए क्या प्लानिंगें बनाई हुई हैं, उसे क्या मंजूर है?

हम जब परमात्मा को पुकारते हैं वह जरूर आता है, वह रहम का समुद्र है। कबीर साहब हमें बहुत सी उदाहरणें देकर समझाते हैं कि जानवर भी अपनी कुल की रीति की पालना करते हैं कि कहीं हमारी कुल को दाग न लग जाए ! बड़े सिर को बड़ी दर्द होती है। गाँव के मुखिया की ज्यादा जिम्मेवारियाँ होती हैं।

परमात्मा ने इन्सान को सब योनियों का सरदार बनाकर भेजा है। हमने परमात्मा की भक्ति करके **परमात्मा से मिलाप** करना है। सन्त-महात्मा हमें परमात्मा की याद दिलाने के लिए ही संसार में आते हैं। कोई भी माँ के पेट से चोर, शराबी, नशेड़ी या अपराधी पैदा नहीं होता। हम अपने आपको नशे या बुरी आदतों के रोग लगा लेते हैं; यह सब सोहबत-संगत का ही असर है।

महात्मा हमें समझाते हैं कि हम जैसी संगत करते हैं हम पर उसका वैसा ही असर पड़ता है। अगर हम चोरों की संगत करते हैं तो हमें चोरी करने की आदत पड़ जाती है। जुएबाजों की संगत करते हैं तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। शराबियों की संगत करते हैं तो शराब पीने की आदत पड़ जाती है।

लुकमान पैगम्बर बहुत समझदार थे। उनका बेटा एक ऐसे लड़के की संगत कर रहा था जिसमें बहुत बुराइयाँ थी। लुकमान पैगम्बर ने अपने लड़के को उस लड़के से मिलने के लिए मना किया तो उनके लड़के ने कहा, ''पिताजी ! मैं बहुत समझदार हूँ। मैं उसके साथ बातें तो जरूर करता हूँ लेकिन अपने ऊपर उसका रंग नहीं चढ़ने दूँगा।'' पैगम्बर साहब ने सोचा अगर मैंने इसके साथ जबरदस्ती की तो यह विद्रोह करेगा।

पैगम्बर साहब ने एक कोयला लेकर अपने लड़के से कहा, ''बेटा! तू यह कोयला अपने हाथ में पकड़ ले लेकिन तेरा हाथ काला नहीं होना चाहिए।'' लड़के ने कहा, ''पिताजी ! ऐसा कैसे हो सकता है कि कोयला हाथ में पकड़ने से मेरा हाथ काला न हो?'' पैगम्बर साहब ने कहा, ''तू यह कैसे कह सकता है कि बुरी संगत करके तेरे ऊपर बुरा असर नहीं पड़ेगा।'' फरीद साहब कहते हैं:

लोड़े दाख बेजूरिया, कीकर बीजे जट।
हंडा ऊन कताऐंदा, पेंदा लोड़े पट॥

अगर कोई यह चाहे कि मैं कीकर बीजकर काबुल, कंधार या बिजोर के मेवे खा लूँगा ! यह कैसे हो सकता है? प्यारेयो ! कीकर बीजकर तो हमें काँटे ही मिलेंगे। हमने मालिक के प्यारो की संगत करनी है। हमारे ऊपर भी उनकी भक्ति और प्यार का रंग चढ़ जाए और हम **परमात्मा से मिलाप** कर सकें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सच्ची बैठक तिन्ना संग, जिन संग जपिए नाओ।
तिन संग संग न कीचे, नानक जिन्हा अपणा साओ॥

मालिक के प्यारों की संगत सच्ची है। उनकी संगत में हम 'नाम-शब्द' की कमाई करते हैं। उनकी संगत को परमात्मा अपने लेखे में लगाता है। आप अहंकार और भोगों में फँसे हुए लोगों की संगत से दूर रहें। कबीर साहब कहते हैं:

साकत संग न कीजिए, दूरो जाइए भाग।
वासन कारो परसिए, तो कुछ लागे दाग॥
साकत ऐसा है, जैसी लहसन की कान।
कोने बहकर खाइए, प्रगट भए नदान॥

साकत का दिल विषय-विकारों के कारण काले कम्बल की तरह दागी होता है। वे परमात्मा का नाम जपने वालो का मजाक उड़ाते हैं। आप कहते हैं, ''ऐसों की संगत न करें, वहाँ से भाग जाएं अगर उनकी महक भी आ गई तो वे आपको भक्ति से दूर ले जाएंगे। जैसे लहसुन की वासना छिप नहीं सकती।''

जब शिष्य अपने फैले हुए ख्यालों को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' की आवाज को सुनता है तब उसे अपनी कमजोरियों और सतगुरु की मेहर का पता लगता है कि सतगुरु क्या ताकत है; परमात्मा के साथ सतगुरु का क्या रिश्ता है?

शिष्य परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मैं दुनिया से छिपकर पाप करता हूँ, दुनिया को बड़ा और तुझे छोटा समझता हूँ। *काम* ने मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है, मन ने मुझे पागल कर दिया है। तू मेरा

लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे ! अगर तूने मेरा लेखा लिया तो मैं कैसे छूट सकता हूँ? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लेखा करत ना छूटिए, खिन्न खिन्न भूलनहार।
बख्शनहारा बख्श ले, नानक पार उधार॥

हम लेखा देकर छूट ही नहीं सकते। महाराज सावन सिंह जी दुखी दिल से कहा करते थे, ''सतगुरु किसी का इम्तिहान न ले। हम जीव किसी तरह भी पास नहीं हो सकते। यह तो उनकी दया ही है कि वे हम शराबी, कबाबी, भूले भटकों और पत्थर दिलवालों को मोम बनाते हैं; हम पर प्यार बरसाते हैं।''

सन्तों को किसी के प्यार की जरूरत नहीं होती वे तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। गुरु पहले शिष्य बनता है। सन्तों ने अपनी बानियों में अपनी जिंदगी के हिस्से को बयान किया होता है। वे चकोर की तरह अपना ध्यान अपने गुरु की तरफ लगाते हैं। सोते-जागते गुरु गुरु ही करते हैं।

हमारा गुरु 'नामदान' देकर शब्द-रूप होकर हमारे अंदर बैठा है। खाना खाते समय हमारा ख्याल कहीं और होता है। अगर हम खाना खाते समय अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच लाकर अपने गुरु को भोग लगवाए ! आप जो भी निवाला खाते हैं सोचें ! गुरु को खिला रहे हैं। पानी पीते समय भी यही सोचें ! हम अपने गुरु को पानी पिला रहे हैं। हाथ धो रहे हैं तो भी यही सोचें ! हम अपने गुरु के हाथ धुलवा रहे हैं। नहाते हुए भी यही सोचें ! हम अपने गुरु को नहला रहे हैं। आप एक हफ्ता ऐसा करके देखें ! आपकी काया ही पलट जाएगी। गुरु रूप परमात्मा हमारे अंदर ही बैठा है।

खाना बनाते समय लड़कियाँ अपने ख्याल नेक-पाक रखें, सिमरन करें; दुनिया के ख्यालों को मन में न लाएं। उनके हाथ से बना हुआ खाना खाने वालों की बुद्धि अच्छी हो जाती है।

राम झरोखे बैठकर सबका झारा ले, जाँकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे।

मुझे एक बार जगन्नाथ जाने का मौका मिला। मैं वहाँ कई मठों में गया। कबीर साहब के मठ में पाँजी बाँटी जा रही थी। वहाँ एक माता कह रही थी कि कबीर साहब ने पाखंड की भक्ति को दूर करके 'नाम' की पाँजी बाँटी थी। मैंने वहाँ से भोग लिया। इसी तरह बाबा मलूकदास के मठ में एक बुजुर्ग रोज टुकड़े बाँटते हुए यह कहताः

अजगर करे न चाकरी, पक्षी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥

हमने तो सहजयोग और प्यार को लेना है। मैंने वहाँ से अपने हिस्से का प्रशाद बड़ी श्रद्धा से लिया। इसी तरह वहाँ कृष्ण की भक्तनी कर्माबाई का भी मठ है। वहाँ खिचड़ी का भोग लगवाया जाता है। कर्माबाई कृष्ण को बाल गोपाल समझकर उसके लिए खिचड़ी तैयार करती, बच्चे खिचड़ी खाकर बहुत खुश होते हैं। वह सच्चे दिल से खिचड़ी बनाकर मूर्ति के आगे रख देती और बहुत खुश होती।

एक दिन कर्माबाई अपनी बिरादरी में शादी के प्रोग्राम में गई। वहाँ जाकर वह अपना नित्य-नियम भूल गई। जब उसकी नींद खुली तो रोने लगी कि आज मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है, मेरा बच्चा भूखा होगा ! वह इसी लहजे में भागी आई जब उसने दरवाजा खोलकर देखा कि वहाँ एक बालक खिचड़ी बना रहा था। उसने कहा, ''बेटा ! आज तू भूखा रह गया होगा? मैं रोज का नित्य-नियम भूल गई तेरे लिए खिचड़ी नहीं बना सकी।'' बालक ने कहा, ''माता ! तू रोज मेरे लिए खिचड़ी बनाती थी, आज मैंने बना ली है; आ तू मेरे साथ बैठकर यह खिचड़ी खा।'' यही प्यार है।

अगर सेवक के अंदर सच्चा प्यार है, उसका ध्यान पक गया है और उसका ख्याल दोनों भरवटों के बीच जुड़ा हुआ है। वह ध्यान में इतना मग्न हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि गुरु मेरे अंदर

प्रगट हो गया है और मेरे साथ बातचीत कर रहा है। हमें गुरु पर ऐतबार नहीं, इसलिए हम कहते हैं, ''पर्दा खोलो।

मैंने कई प्रेमियों को महाराज सावन के आगे विनती करते हुए देखा है। वे कहते, ''महाराज जी ! हमारा पर्दा खोलो।'' महाराज जी कहते, ''क्यों भई ! भजन करता है, कितना भजन करता है?'' वे लोग चुप हो जाते। भजन करने वालों को यह कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती; क्योंकि गुरु तो अंदर ही बैठा है।

मुझे हुक्म मानने का गुण आर्मी से मिला। मैं बचपन में ही आर्मी में चला गया था। आर्मी का यह कानून है कि आपको जो हुक्म मिले आप पहले उसे पूरा करें अगर आपको खाना बनाने के लिए कहा जाए तो आप पहले खाना बनाएं। खाना बनाने के लिए लकड़ियाँ, आटा कहाँ से आएंगे यह सवाल बाद में करें।

जब मैं अपने गुरु के चरणों में आया तो मैंने सोचा कि आर्मी में दुनियावी बंदों के हुक्मों का इतना पालन किया है कि अगर अफसर अटेंन्शन खड़े रहने का हुक्म दे दे तो जवान अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उड़ा सकता। अगर उस समय जवान के ऊपर साँप भी चढ़ जाए तो वह उसे भी नहीं हटा सकता। हम एक इन्सान का इतना हुक्म मानते हैं ! इस मुकाबले में गुरु का कितना हुक्म मानना चाहिए?

यही कारण था कि मैं अपने गुरुदेव की दया से ही उनकी आज्ञा का पालन कर सका। मुझे अपने गुरुदेव से यह कहने की जरूरत ही नहीं पड़ी कि आप मेरा पर्दा खोलें ! यह उनका ही काम है अगर हम अपने आप में एकाग्र हैं, हमारे अंदर इस तरह का प्यार है तो हमें पता ही नहीं चलता कि गुरु हमारे अंदर प्रगट हो गया है।

मैं सदा ही कहा करता हूँ, ''जब हमें सन्त-सतगुरु मिल जाएं तो हमें उनके साथ सच्चे दिल से प्यार करना चाहिए। दुनिया के प्यार को कम करें, दुनिया का मोह छोड़ें; अपनी आत्मा को अंदर एकाग्र करके

बिना किसी झिझक के अंदर जाएं। सतगुरु अंदर सुरत को 'शब्द' के साथ जोड़ता है। हमारी आत्मा को जिस चीज़ की भूख-प्यास है वह अंदर ही मिल जाती है।'' कबीर साहब का शब्द सुनें आप हमें बड़े प्यार से उदाहरणें देकर समझा रहे हैं:

जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै, जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै॥
गुरु का नाम ध्यान ना छूटै, परगट ना गोहरावै॥

कबीर साहब कहते हैं कि जिसकी आँखों में चौबीस घंटे गुरु की मनमोहिनी मूरत समाई हुई है और जुबान पर सिमरन है; इस तरह की प्रीत करने वाले के लिए गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु की मूरत मन में ध्यान, गुरु का शब्द मंत्र मन मान।

गुरु की मूरत का भाव स्वरूप से है। गुरु आपको जो मंत्र देते हैं आप उसका जाप करें। शुरू में आदत डालनी पड़ती है क्योंकि हमें सिमरन की नहीं कल्पना करने की आदत है। कल्पना इस तरह उठती है जैसे हम यहाँ सतसंग में बैठे हैं लेकिन मन कोई न कोई कल्पना करता ही रहता है; किसी भाग्य वाले का ही मन टिका हुआ होता है।

हम घर-बार और कारोबार छोड़कर यहाँ सतसंग में आए हैं लेकिन ये कल्पनाएं फिर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ती। हम दिन-रात दुनिया का सिमरन करने में लगे हुए हैं। पानी की कमी की वजह से सूखी खेती पानी से ही हरी हो सकती है। जब हमारा ध्यान पक जाता है तो मन की जुबान से सिमरन होना शुरू हो जाता है।

हमें मालूम है कि जज अपने काम का सिमरन करता है कि मुझे कल कौन सा मुकदमा लगाना है, क्या फैसला करना है? क्लर्क अपने काम का सिमरन करते हैं कि मैंने कल कौन सी फाइलें तैयार करनी हैं? बीबीयाँ अपने चूल्हे-चौंके का सिमरन करती हैं कि रसोईघर में कौन सा सामान कम है? जमींदार अपने काम का सिमरन करते हैं कि हमें कौन सी फसल बीजनी है?

हमें सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है, हम जिसे याद करते हैं उसकी शक्ल अपने आप ही आँखों के सामने आ जाती है। बच्चों को याद करते हैं तो वे उसी तरह दौड़ते-फिरते नजर आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाए।
सुरत समानी शब्द में, ताको काल न खाए॥

जब मन की जुबान से किया हुआ सिमरन पूरा हो जाता है, हम अनहद शब्द को पकड़कर दूसरी तीसरी मंजिल पर पहुँचते हैं वहाँ महा अंधेरा है। जब हम सतगुरु को प्रगट कर लेते हैं; गुरु अपने प्रकाश के साथ आत्मा को ले जाता है।

मैंने तुलसी साहब के *अनुराग सागर** पर कई बार सतसंग किए हैं। जिसमें यह बताया है कि किस तरह सतगुरु अपनी आत्मा के साथ सेवक की आत्मा को मिलाकर आगे ले जाता है। इस बारे में गुरु नानक साहब ने कहा हैः

जे सौ चन्दा उगवे, सूरज चढ़े हजार।
ऐते चानण होन्दया, गुरु बिन घोर अंधार॥

महासुन्न के देश में चाहे लाखों, करोड़ों, सूरज चन्द्रमा निकल आएं वहाँ फिर भी अंधेरा है। पारब्रह्म में पहुँची हुई आत्मा का बारह सूरज जितना प्रकाश हो जाता है। हमारी आत्मा अनहद शब्द का कोर्स पूरा करके इससे ऊपर चली जाती है। गुरु आत्मा को मिलाकर अपने धाम ले जाता है। भँवरगुफा तक *काल* की हद है। हम *काल* की हद को अपनी ताकत से पार नहीं कर सकते। कहीं हमारे दिल में ख्याल हो कि हम इस मसले को कर्म-धर्म या पूजा-पाठ से हल कर लेंगे।

कबीर साहब कहते हैं, ''सतगुरु की दया से जब हमारा जाप पूरा हो जाता है, आँखें अपने आप फड़कनी बंद हो जाती हैं। जुबान हिलनी बंद हो जाती है। आत्मा की जुबान से सिमरन शुरु हो जाता है।

सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं, उस सिमरन के पीछे उनकी शक्ति, तप और त्याग काम करता है। हजरत बाहु ने कहा है:

जुबान न हिले होठ न फड़कन, खास नवाजी सोई हू।
जुबानी कलमा हर कोई आखे, ते दिल दा पढ़दा कोई हू॥

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर राम राम कहने से राम मिलता होता तो हम सबको पहले ही राम मिल जाना चाहिए था अगर शक्कर शक्कर कहने से मुँह मीठा हो जाता तो शक्कर बनाने की क्या जरूरत थी? आपका ध्यान इस तरह पक जाना चाहिए कि गुरु अंदर प्रगट हो जाए और आपको पता भी न लगे।''

कुरम सुतन को धरतु है ऊँचे, आप उद्र को धावै॥

आप कछुए की मिसाल देकर समझा रहे हैं कि कछुआ पानी में रहता है लेकिन अपने अंडे ऊँची जगह खुष्की में देकर आता है, वह अपने बच्चों को ध्यान के जरिए पकाता है; ऐसे महात्मा कछुए की मिसाल होते हैं। मुर्गी अंडों के ऊपर बैठकर उन्हें पकाती है, ऐसे महात्मा अपने पास रहने वालों का ही फायदा कर सकते हैं; ऐसे महात्मा मुर्गी की मिसाल होते हैं। कूंज सिमरन के जरिए अपने बच्चों की परवरिश करती है, ऊँचे दर्जे के महात्मा सिमरन के जरिए अपने बच्चों की परवरिश करते हैं; ऐसे महात्मा कूंज की मिसाल होते हैं।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से होका देते हैं कि जहाँ पूरा गुरु है वहाँ अधूरे गुरु भी हैं। असल की नकल सदा ही होती आई है। मैं कहा करता हूँ, ''प्यारेयो ! किसी महात्मा की शरण में जाने से पहले उसकी जिंदगी पढ़ो; क्या उसने कभी भजन-अभ्यास किया है? दस-बीस साल खोज की है? तन मन धन की कोई कुर्बानी की है?'' ऐसा नहीं कि 'नाम' दिया और कान में फूँक मारकर कहा कि मैं तेरा गुरु हो गया हूँ। 'नाम' जिम्मेवारी है, जिम्मवारी को निभाना बहुत मुश्किल है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो डुबन्दे आप से तारे किन्खे।
तरन्दयो भी तार नानक पिर स्यों रतया॥

निसु दिन सुरत रहै अंडन पर, पल भर ना बिसरावै॥

जब हमें 'नाम' मिल जाता है तब सोते-जागते, उठते-बैठते और सपने में बरड़ाते हुए भी गुरु का ध्यान और गुरु का सिमरन याद होना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

सुपने हू बरड़ाएके, जे मुख निकसे राम।
ताँके पग की पनही, मेरे तन को चाम॥

जो सपने में बरड़ाकर भी उस मालिक को याद करता है, मैं उसे अपने तन की जूतियाँ बनाकर देने के लिए भी तैयार हूँ लेकिन हमारे सपनों में आता है, 'मारो ! पकड़ो !' हम दिन में परेशान हैं, रात को भी परेशान हैं। बहुत से प्रेमी मिलते हैं तो कहते हैं कि हमें बहुत बुरे सपने आते हैं। सिमरन नहीं करेंगे तो बुरे सपने ही आएंगे।

जैसे चात्रिक रटै स्वाँति को, सलिता निकट ना आवै॥
दीनदयाल लगन हितकारी, स्वाँती जल पहुँचावै॥

आप प्यार से पपीहे की मिसाल देते हैं कि पपीहा पानी की रट तो लगाता है लेकिन किसी दरिया या तालाब का पानी नहीं पीता। परमात्मा उसकी प्यास के दर्द को सुनकर उसके पास स्वाँति बूँद भेजता है।

इसी तरह जो सेवक दुनिया के सब सहारे छोड़कर दिन-रात परमात्मा से मिलाप के लिए तड़पता है; परमात्मा से भी नहीं रहा जाता वह अपने प्यारे बच्चे सन्तरूप को हमारी आत्मा की प्यास बुझाने के लिए भेजता है।

फूटि सुगंध कंज की जैसे, मधुकर के मन भावै॥
ह्वै गइ साँझि बँधि गे संपुट, ऐसी भक्ति कहावै॥

कमल का फूल पानी में रहता है, भँवरा उसका आशिक है। कमल में से महक आती है तो भँवरा कमल के फूल के अंदर चला जाता है।

वहाँ जाकर वह इतना मस्त हो जाता है कि उसे न दिन का पता लगता है न रात का पता लगता है। रात होने पर कमल बंद हो जाता है। कमल में बंद होकर भँवरा दम तोड़ देता है या कोई पक्षी उसे खा जाता है। इसी तरह जिनका भजन-सिमरन, प्यार इस तरह का हो जाता है उन्हें न तो समय याद रहता है न दिन और तारीख याद रहती है। वह सोते-जागते भजन में ही लगे रहते हैं।

जैसे चकोर ससी तन निरखे, तन की सुधि बिसरावै॥
ससि तन रहत एक टक लागो, तब सीतल रस पावै॥

आप प्यार से कहते हैं, ''चकोर का चन्द्रमा के साथ इतना प्यार है कि जितनी देर चन्द्रमा शरीर में रहता है चकोर अपने शरीर की सुध भूल जाता है। चकोर जैसे जैसे चन्द्रमा की तरफ ध्यान टिकाता है उसे रस आता है, शान्ति आती है, वह ध्यान छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता।'' अगर शिष्य का ऐसा ध्यान गुरु की तरफ पक जाए तो शिष्य को अंदर रस आता है, शान्ति आती है।

महाराज जी लैला मजनूं की मिसाल दिया करते थे। किसी ने मजनूं से कहा, ''तुझसे खुदा मिलना चाहता है?'' मजनूं ने कहा, ''लैला बनकर आ जाए।'' अगर इन्सान दुनियावी प्यार में इतना मस्त हो सकता है तो हकीकी प्यार कैसे बयान किया जा सकता है?

मैंने आर्मी में सिग्नेलर का काम सीखा है। उस समय हिन्दुस्तान में वायरलैस नहीं हुआ करती थी। दिन में ऊँची जगह खड़े होकर झंडी से इशारे दिए जाते थे। रात को तेज रोशनी वाले लैम्प से इशारे दिए जाते थे जिसकी रोशनी आँखों पर पड़ती थी। अगर एक बार भी आँख झपक जाए तो पता नहीं कितने ही इशारे निकल जाते; जरा भी आँख झपकने की इजाजत नहीं थी। सिग्नेलर पर सारे मुल्क की जिम्मवारी होती है। अगर किसी मुल्क का कम्युनिकेशन गलत या ढीला है तो दूसरे मुल्क उस पर हावी हो जाते हैं।

ऐसी जुगत करै जो कोई, तब सो भगत कहावै ॥

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेयो ! इसमें गरीब-अमीर, हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई का सवाल नहीं। जो 'नाम' लेकर यह युक्ति और साधन करता है वही भक्त कहलवा सकता है, परमात्मा का प्यारा बन सकता है। परमात्मा का प्यारा सबका प्यारा बन जाता है।''

कहै कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभु दरस दिखावै ॥

जब हमारे अंदर से इस तरह का प्यार फूट फूटकर बाहर निकलता है। हम तन-मन गुरु पर अर्पण करते हैं; दिन-रात परमात्मा को याद करते हैं तब उस परमात्मा से भी रहा नहीं जाता और वह हमें गुरु के स्वरूप में अंदर दर्शन देता है, हमारा ढाँढस बंधवाता है और हमें तृप्ति देता है। जिन शिष्यों का ऐसा ध्यान पक जाता है उनका जप-तप, पूजा-पाठ सब कुछ ही हो जाता है।

जो शिष्य सोते-जागते, उठते-बैठते सिमरन में लगा हुआ है। वह जब एकाग्र होकर बैठता है उसे तन की फिक्र नहीं रहती। उसके दोनों भरवटों के दरमियान गुरु स्वरूप प्रगट हो जाता है।

मैं सतसंग में कहा करता हूँ, ''प्यारेयो ! जब आँख पोंछने वाला पास न हो तो रोने में भी मजा नहीं आता।'' जब तक वह प्यारा हमारे अंदर प्रगट नहीं होता हम तब तक खुष्क रहते हैं। कई कई दिन भजन छोड़े रखते हैं। आप एक बार उसे अपने ऊपर मेहरबान करके देखें ! जब ऐसी हालत हो जाती है तो शरीर टूटने लगता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

अमली जिए अमल खाए, त्यों हर जन जिए नाम ध्याए।

जिनका साध-संगत में प्यार लग जाता है वे लोकलाज की परवाह नहीं करते। उन्हें 'शब्द' के साथ जुड़े बिना रस नहीं आता। हमें भी चाहिए कि कबीर साहब के कहे मुताबिक 'शब्द नाम' की कमाई करें, अपने जीवन को सफल बनाएं। h c h